मैनपुरी जिले में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन

डॉ0 सुनीता मिश्रा* और दीप्ति पचौरी**

सारांश

इस शोध अध्ययन का उद्देश्य उत्तर–प्रदेश के जनपद मैनपुरी जिले में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण–प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना था। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु 200 शिक्षक (महिला एवं पुरूश) राजकीय, सहायता प्राप्त एवं वित्तविहीन विद्यालयों से आकस्मिक (प्छब्क्म्छज्।स्) विधि से चयनित किये गये।इन विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता के मापन हेतु डॉ पी0 कुमार एवं डॉ0 डी0 एन मुथा (1999) द्वारा निर्मित प्रमापीकृत 'टीचर इफैक्टिवनेस स्केल' का प्रयोग किया। सांख्यिकी विश्लेशण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान की गणना की गयी। विश्लेशणोपरान्त राजकीय एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता उच्च पायी गयी, जबकि वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता सबसे निम्न पायी गयी। सम्भवतः इसका कारण यह हो सकता है कि इन विद्यालयों के शिक्षक उच्च योग्यता वाले, प्रशिक्षित, स्थायी, उच्च वेतनमान प्राप्त, अधिक शिक्षण अनुभव रखने वाले तथा आयोग द्वारा नियुक्त होते हैं, जबकि वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षक प्रबन्ध तंत्र द्वारा नियुक्त, प्रबंधकों का कठोर नियंत्रण, अस्थायी नियुक्ति, अप्रशिक्षित, कम वेतन प्राप्त एवं कम शिक्षण अनुभव रखने वाले होते हैं। क्रो तथा क्रो के अनुसार (1963) – '' किसी भी शैक्षिक स्तर पर अध्यापक विद्यालय की गतिविधियों का मुख्य आधार है। शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति उसी सीमा तक तक होती है, जिस सीमा तक पृथक–पृथक अध्यापक विद्यार्थियों को शैक्षिक कार्य–विधियों से लाभान्वित होने के लिये प्रेरित करते हैं।''

प्रस्तावना

शिक्षक शिक्षा पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति है। राश्ट्र–निर्माण की महती भूमिका का निर्वहन सुयोग्य, समर्पित, सृजनशील एवं प्रभावशाली माध्यमिक शिक्षकों द्वारा ही सम्भव है। शिक्षक ही विद्यालय तथा शिक्षा पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति है। यह सत्य है कि विद्यालय भवन, पाठ्यक्रम, पाठ्य–पुस्तकें आदि सभी शैक्षिक कार्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं परन्तु जब तक उनमें अच्छे शिक्षकों द्वारा जीवन शक्ति प्रदान नहीं की जायेगी तक तक वे निरर्थक रहेंगी। अतः शिक्षक का व्यक्तित्व वह धुरी है जिस परीक्षा व्यवस्था घूमती है। वागू, एम0एम0ए (1984), शुक्ला, श्रद्धा (2002) ने अपने–अपने अध्ययन के परिणामस्वरूप स्पश्ट किया कि व्यक्तित्व संबंधी कारक जैसे–अनुशासन प्रियता, नेतृत्व क्षमता आदि शिक्षक–प्रभावशीलता को सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं ।

शिक्षक को समाज का आर्कीटेक्ट, इंजीनियर, वैज्ञानिक, एवं सेवक कहा जाता है। इसीलिये अब्दुल कलाम (2002) ने लिखा है कि – ''एक अध्यापक ने एक बार कहा था, मुझे पाँच वर्श का एक बच्चा दो। सात साल बाद कोई भगवान या शैतान भी उस बच्चे को बदल नहीं सकता। यह दावा एक प्रभावशाली शिक्षक ही कर सकता है।''

शैक्षिक कार्यक्रम का संचालन शिक्षक करता है, वही छात्रों को ज्ञान होता है, यदि किसी विद्यालय की व्यवस्था, पाठ्यक्रम, पाठ्य–पुस्तक, शिक्षण–अधिगम सामग्री, एवं शिक्षण विधि आदि कितनी भी अच्छी हो, परन्तु शिक्षक प्रभावशाली न हो तो सारी व्यवस्था बेकार हो जायेगी। एक अच्छा शिक्षक खराब से खराब सामग्री, व्यवस्था होने पर भी शिक्षण को प्रभावी बना सकता है लेकिन इसके लिये आवश्यक है कि शिक्षक पूर्ण समर्पित होकर सेवा भाव से अपना कार्य करें और उनमें प्रभावशीलता का गुण विद्यमान हो। शिक्षक–प्रभावशीलता शिक्षक के कार्य निश्पादन से संबंधित होती है जो कि उसके विद्यार्थियों की उपलब्धियों में प्रतिबिम्बित होती है। यदि कोई छात्र ज्ञान और कौशल के प्रर्दशन में असफल प्रतीत होता है तो यह छात्र एवं शिक्षक दोनों की असफलता मानी जाती है। परिणामतः कहा जा सकता है कि राश्ट्र निर्माण की महती भूमिका

*प्रवक्ता, शिक्षा विभाग, डा. बी.आर.ए. विश्वविद्यालय आगरा (उ0प्र0)
**शोध छात्रा

का निर्वहन सुयोग्य, समर्पित, सृजनशील, एवं प्रभावशाली शिक्षक द्वारा ही है ।

ज्ञान के सम्प्रेशण की क्रिया को व्यवस्थित रूप में संचालित करने में विद्यालयों की अहम भूमिका होती है। यह विद्यालय सरकार द्वारा संचालित एवं मान्यता प्राप्त होते हैं। मान्यता प्राप्त विद्यालयों में से कुछ विद्यालय निजी होते हैं, कुछ संस्था विशेश द्वारा चलाये जाते हैं। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास एवं शिक्षकों की प्रभावशीलता में वृद्धि हेतु विद्यालय का उत्तम वातावरण होना आवश्यक है। इस सन्दर्भ में इगंरसॉल (चौधरी, 2010) ने कहा है कि – 'एक उत्तम स्कूल का शिक्षक एक हजार पुजारियों के बराबर होता है।'

प्रस्तुत अध्ययन राजकीय सहायता प्राप्त एवं वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों से संबंधित है। इस सन्दर्भ में शेल्डन डेविस के अनुसार ''किसी भी विद्यालय की महत्ता उसके शिक्षकों पर निर्भर करती है।'' तीनों प्रकार के विद्यालयों की कार्यप्रणाली में विविधता तथा कार्यरत शिक्षकों का प्रशिक्षण एवं वेतन अलग–अलग मानदण्डो को दृश्टिगत रखते हुये हैं। अतः प्रश्न उठता है कि वर्तमान में माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता को उत्तम बनाने हेतु अनेक सुविधायें, साधनों एवं उपकरणों की व्यवस्था है फिर भी कुछ शिक्षक प्रभावशाली रूप से कार्य क्यों नहीं करते ? क्या इन तीनों प्रकार के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई विविधता है अथवा नहीं ?इन्हीं प्रश्नों के उत्तरों को प्राप्त करने के लिये इस सन्दर्भ में शोधार्थिनी ने शोध के रूप में निम्न समस्या का चयन एवं संबंधित साहित्य का अवलोकन किया गया यथा कुमार (1991) ने अपने अध्ययन में पाया कि कला व विज्ञान तथा वाणिज्य व विज्ञान शिक्षक समान रूप में प्रभावशाली पाये गये। सक्सेना (1995)ने अपने अध्ययन में पाया कि प्रभावी एवं अप्रभावी शिक्षक अपने कृत्य से संतुश्ट, सुसमायोजित तथा शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति रखते हैं। कृश्णन एवं सिंह (1995) ने शिक्षकों के लिंग, सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं शहरी/ग्रामीण होने का शिक्षक प्रभावशीलता पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया। गौड़ एवं सिंह (2009) ने अपने अध्ययन में पाया कि सरकारी/निजी विद्यालय, विवाहित/अविवाहित, सामान्य एवं अनुसूचित जाति के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नहीं था, लेकिन सामान्य व अन्य पिछड़ी जाति तथा अनुसूचित व अन्य पिछड़ी जाति के शिक्षकों के मध्य सार्थक अंतर था। राव (2009)ने नियमित एवं शिक्षाकर्मी शिक्षकों की प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नहीं पाया। कुमार, अरविन्द एवं चौधरी, के.के. (2011) के शोध परिणामों से स्पश्ट है कि अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षक–प्रभावशीलता औसत से अधिक पायी गयी, जबकि विद्या भारती द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक की शिक्षक प्रभावशीलता श्रेश्ठ स्तर की पायी गयी ।

अध्ययन के उद्देश्य

1. सरकारी एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण–प्रभावशाली का अध्ययन करना।
2. सरकारी एवं वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण–प्रभावशाली का अध्ययन करना।
3. सहायता प्राप्त एवं वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण–प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

परिकल्पनायें

1. सरकारी एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता में कोई अंतर नहीं है ।
2. सरकारी एवं वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता में कोई अंतर नहीं है ।
3. सहायता प्राप्त एवं वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता में कोई अंतर नहीं है ।

अध्ययन विधि एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' को अपनाया गया है। इस अध्ययन में जनसंख्या के अन्तर्गत उ0प्र0 राज्य के मैनपुरी जिले में स्थित राजकीय, सहायता प्राप्त एवं वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक सम्मिलित है। संयोगजन्य प्रतिचयन न्यादर्श ;प्छब्क्म्छज।स्द्ध विधि द्वारा इन विद्यालयों में कार्यरत कुल 200 शिक्षक, जिनमें राजकीय विद्यालयों से 57, सहायता प्राप्त विद्यालय से 83 एवं वित्तविहीन विद्यालय से 60 शिक्षक प्रदत्त संकलन हेतु चुने गये।

प्रदत्त संकलन हेतु डॉ0 पी0 कुमार एवं डॉ0 डी0एन0 मुथा (1999) द्वारा निर्मित प्रमापीकृत 'टीचर इफैक्टिनेस स्केल' का प्रयोग किया गया। इस मापनी में पदों का वितरण 6 क्षेत्रों तथा 10 उपक्षेत्रों में किया गया है। इस उपकरण की विश्वसनीयता अर्द्ध–विच्छेद विधि से ज्ञात करने पर 0.82 तथा परीक्षण–पुनर्परीक्षण विधि से दो माह के अंतराल पर 0.86 पायी गयी। इस उपकरण की रूप वैधता ज्ञात की गयी और यह उच्च स्तर की पायी गयी। प्रदत्तों से निश्कर्ष निकालने हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान की गणना की गयी ।

विश्लेषण, व्याख्या एवं परिणाम

तालिका संख्या–1

सरकारी एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्रभावशीलता का अध्ययन

सरकारी एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात तथा सार्थकता स्तर

क्रमांक	विद्यालय के प्रकार	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता अन्तर
1	सरकारी	57	317.92	21.18	.754	0.05 स्तर पर असार्थक
2	सहायता प्राप्त	83	320.65	21.05		

व्याख्या

उपर्युक्त तालिका में दर्शाये गये मध्यमान मूल्यों से स्पष्ट होता है कि सहायता प्राप्त विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की तुलना में अधिक उच्च पायी गयी।

उक्त दोनों विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है अथवा नहीं, जानने हेतु क्रान्तिक अनुपात की गणना की गयी क्रान्तिक अनुपात के अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि सरकारी एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण–प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है क्योंकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 0.05 स्तर पर असार्थक है।

तालिका संख्या–2

सहायता प्राप्त एवं वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात तथा सार्थकता स्तर

क्रमांक	विद्यालय के प्रकार	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता अन्तर
1	सहायता प्राप्त	83	320.65	21.08	6.11	0.01 स्तर पर सार्थक
2	वित्त विहीन	60	302.25	15.02		

व्याख्या

उपर्युक्त तालिका में दर्शाये गये मध्यमान मूल्यों से स्पष्ट होता है कि सहायता प्राप्त विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण–प्रभावशीलता वित्तविहीन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की तुलना में अधिक उच्च पायी गयी।

उक्त दोनों विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण–प्रभावशीलता में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है अथवा नहीं, यह जानने हेतु क्रान्तिक अनुपात के अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि सहायता प्राप्त एवं वित्त विहीन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है क्योंकि क्रान्तिक अनुपात 0.01 स्तर पर सार्थक है।

तालिका संख्या–3

सरकारी एवं वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के मध्यमान मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात तथा सार्थकता स्तर

क्रमांक	विद्यालय के प्रकार	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता अन्तर
1	सरकारी	57	317.92	21.18	4.59	0.01 स्तर पर सार्थक
2	वित्त विहीन	60	302.25	15.02		

व्याख्या

उपर्युक्त तालिका में दर्शाये गये मध्यमान मूल्यों से स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण–प्रभावशीलता में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है अथवा नहीं, यह जानने हेतु क्रान्तिक अनुपात के अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि सहायता प्राप्त एवं वित्त विहीन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण–प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है क्योंकि क्रान्तिक अनुपात 0.01 स्तर पर सार्थक है।

निष्कर्ष

अध्ययन की उपलब्धियों के आधार पर कहा जा सकता है कि –

1. सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्रभावशीलता सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में अधिक उच्च पायी गई ।
2. सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्रभावशीलता वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में अधिक उच्च पायी गयी ।
3. सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता की तुलना में अधिक उच्च पायी गयी। अर्थात् वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों में प्रभावशीलता सबसे निम्न पायी गयी ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अब्दुल कलाम, ए0पी0जे0 (2002). तेजस्वी मन । नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन, पृश्ठ 121.

अमर उजाला (2013). 'मूल्यांकन कार्य का बहिष्कार करेंगे शिक्षक' दिनांक रूप 24 अप्रैल 2013 पृ0 6.

चौधरी, ई0एस0 (2010). शिक्षक प्रशिक्षण में दक्षता सम्बर्द्धनः क्रियात्मक अनुसंधान की भूमिका नई शिक्षा, 58(6), पृ0 8.

कुमार, पी व मुथा, डी0 एन. (1955) उपकरण 'टीचर इफैक्टिवनेस स्केल'।

कुमार, अरविन्द व चौधरी, के0के0(2011) अशासकीय एवं विद्या भारती द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन! एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड वि.वि., बरेली (उ0प्र0) पृश्ठ सं. 69.

कपिल.एच. के.(1988) सांख्यिकी के मूल तत्व, आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर ।

Gaur D, & Singh, S(2009). Teacher effectiveness and its correlates: A comparative study Modren Educational Research in India, 5 (2), 23-25.

Krishanan, S.S. & Singh J.R.(1995). Impact of teachers' sex, socio-economic status locale on teacher effectiveness. Indian Educational Abstracts, 2(3), 43-44.

क्रो तथा क्रो के अनुसार (1963) – माध्यमिक स्कूलों में शिक्षा, नई दिल्ली, यूरेशिया पब्लिकेशन हाउस, पृ0सं0 271

Kumar, S(1991). Teacher effectiveness among different groups of teacher in relation with personality traits. Indian Educational Review, 26(4), 86-89.

राव, एन.पी. (2009). माध्यमिक स्तर पर नियमित एवं शिक्षाकर्मी शिक्षकों की शिक्षण– प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, Modern Educational Research in India, 6(3), 41-43.

Sexena, J. (1995). A study of teacher effectiveness in relation to adjustment, job satisfaction and attitude towards teacher profession. Indian Educational Abstracts, 2(1), 85-86.

शुक्ला, श्रद्धा (2002) – पर्सनैलिटी एज ए फेक्टर ऑफ इफैक्टिवनेस, इण्डियन जनरल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, वॉ0 21, अंक–1 पृ0 सं0 11

वॉगू, एम0एल0 (1984) – टीचर पर्सनेलिटी कोरिलेट्स एण्ड स्कोलेस्टिक कम्पीटेन्स एज रिलेटिड टू टीचर इफेक्टिवनेस, संदर्भित एम0 बी0 बुच (सम्पादक) थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशनल बड़ौदा, सोसाइटी फॉर एजूकेशनल रिसर्च एण्ड डेवलपमेन्ट, पृ0सं0 1005